मांडूक्य उपनिषद

संक्षिप्त संस्करण

आत्मा का प्रतीक

डॉ. के. रंगय्या (M.V.Sc.)

द्वारा संक्षिप्त

Literary International Publishers
IIP

मांडूक्य उपनिषद
संक्षिप्त संस्करण

First Edition

डॉ. के. रंगय्या (M.V.Sc.)

Title of the Book: मांडूक्य उपनिषद संक्षिप्त संस्करण

First Edition - 2024

Copyright 2024 © डॉ. के. रंगय्या (M.V.Sc.)

No part of this book may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system, without permission in writing from the copyright owners.

Disclaimer
The authors are solely responsible for the contents published in this book. The publishers don't take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

E-ISBN: 978-93-5747-616-4

MRP Rs. 50/-

Publisher, Printed at & Distribution by:
Selfypage Developers Pvt Ltd.,
Pushpagiri Complex,
Beside SBI Housing Board,
K.M. Road Chikkamagaluru, Karnataka.
Tel.: +91-8861518868
E-mail: publish@iiponline.org

IMPRINT: I I P Iterative International Publishers

For Sales Enquiries:
Contact: +91- 8861511583
E-mail: sales@iiponline.org

प्रस्तावना....

मांडूक्य उपनिषद को संकलित करने के दो मुख्य कारण अमुश्मिका और अहिकम हैं।

अमुश्मिकाम:

धर्म की परवाह किए बिना लोगों में यह बात अच्छी तरह से निहित है कि "यदि इस जीवन में धार्मिक आचरण है, तो अगले जीवन में ज्ञान प्राप्त होगा।" यहाँ तक कि धार्मिक नेता भी इसे बढ़ावा देते हैं। इसके चलते आम लोग धर्मगुरुओं के चक्कर लगा रहे हैं। कठोपनिषद कहता है कि ब्रह्म यहीं और अभी बनेगा, किसी समय नहीं। मांडूक्य उपनिषद में उसके लिए उपकरणों का विवरण वर्णित है। गौड़पाद कारिका (अनुवाद) ने आम आदमी को ध्यान में रखने का प्रयास नहीं किया। अद्वैत आम आदमी के दरवाजे पर दस्तक दे रहा है। लेकिन अद्वैत की शिक्षा नहीं दे रहा है। उपनिषद धार्मिक ग्रंथ नहीं है। उपनिषद विधियाँ और नेतृत्व निर्दिष्ट करते हैं।

अहिकाम:

आत्महत्याएँ विशेष रूप से किसानों और छात्रों में अधिक हैं। जैसे कुछ एक्षछात्र है जो आत्महत्या कर ली क्योंकि उनके माता-पिता परीक्षा में असफल होने से नाराज थे और उन्हें टीवी देखने के लिए डांटते थे। उस प्रकार ऐसे कई किसान हैं, जिन्होंने कर्ज में डूबे होने के कारण आत्महत्या कर ली है। इसका मुख्य कारण उन में

आत्मविश्वास की हानि है। तब अंबेडकर की रायथी कि "आरक्षण दस साल के लिए होना चाहिए और फिर हटा दिया जाना चाहिए।" यह अभी भी क्यों चल रहा है? आरक्षण उन्हें हटाने के साथ-साथ मुफ्तखोरी का लालच देकर आम लोगों को भिखारी बनाया जा रहा है। लेने वाले भिखारी हैं, चाहे कैसे भी लें। इस प्रकार के प्रोत्साहनों से आम आदमी को पंगु बनाया जा रहा है। आम लोग ऐसे व्यवहार कर रहे हैं। मानो किसी मरे हुए आदमी से शादी करना ही काफी है। लेकिन उन्हें इससे ज्यादा का नुकसान हो रहा है। प्रश्न करने का अधिकार खो देने के कारण।

इस प्रकार की कमजोरियों को दूर करने में आध्यात्मिक भ्यास बहुत सहायक होता है। चेतना से आम आदमी में बड़ा बदलाव आएगा। यह न केवल व्यक्ति के लिए बल्कि देश के लिए भी अच्छा है। इस प्रकार के परिवर्तन के लिए ही मै इस उपनिषद का सारांश प्रस्तुत करता हूँ। समाज हर जगह बंटा हुआ है। धर्मों और जातियों के बीच मतभेद थे। इससे मानव समाज टूट रहा है। इन सबको केवल अद्वैत ही एकजुट कर सकता है। क्योंकि अद्वैत का संबंध जातियों और धर्मों से अतीत है। लेकिन उपनिषदों का संबंध सार्वभौमिक है।

इस लेखन के कारण एवं विशेषताएँ:

मोक्ष यहीं इसी जीवन में मिलता है, हमेशा के लिए नहीं। पहली बार स्वामी राम की मांडूक्योपनिषत् इश्वर के बिना ज्ञानोदय देखी। इसे पढ़ने से पता चलता है कि उपनिषद में केवल 12 श्लोक हैं. और यति इसके आधार पर अभ्यास किया जाए तो इसी जीवन में मोक्ष प्राप्त

किया जा सकता है। स्वामी विवेकानन्द का अद्वैत का हष्टिकोण हर घर तक पहुंचना है। इन तीनों को मिला दें तो मांडूक्योपनिषद प्राप्त होता है। अद्वैत अधिकतर लोग सोचते हैं. कि यह आम आदमी की समझ से परे है। शंकरपाद के बाद से मांडूक्योपनिषद पर कई टीकाएँ लिखी गई हैं। इन्हें समझना कठिन है क्योंकि ये बहुत विस्तृत और विस्तृत हैं, इसलिए हमने इन्हें संक्षिप्त रखने के उध्देश्य से इनका सारांश दिया है ताकि हर कोई इन्हें समझ सके। हमने किताब को () इस तरह से रखा है कि इसे बिना पन्ने बढ़ाए जेब में रखा जा सके।

विशेषताएँ:

जीव (पुरुष) केन्द्र बिन्दु है। तो आप आसानी से समझ सकते हैं। हम उस भाषा का उपजोग करते हैं जिसे वे समझते हैं। हमने साधना में मदद के लिए दो अध्याय जोड़े हैं। १) साधना।, २) साधक। इनमें से हमने उन बातों को समझाया है जो एक साधक को पता होनी चाहिए। जिससे उसे अभ्यास करने में मदद मिले। हम आशा करते हैं कि हर कोई इस सारांश को पढ़ेगा और समझेगा और आत्म-ज्ञान प्राप्त करेगा। संस्कृत छंदों को तेलुगु में परिवर्तित करने में मदद करने के लिए अनंत शर्मा को धन्यवाद, उसी प्रकार जी. रामचंद्रु जिन्होंने टाइपिंग की थी उन्हे भी धन्यवाद।

अद्वैत अब सभी के लिए उपलब्ध है। अंतर यह है कि वे वही हैं जो सभी के लिए सुलभ हों। संक्षेप में अद्वैत का अर्थ है कि "आत्मा एक है।" आत्मा तुम्हारे भीतर है। अब सबके सामने सवाल यह है कि

किसी भी बात पर आंख मूंदकर विश्वास न करें। क्या कोई आत्मा है? अगर ऐसा है, तो यह कहाँ है? जीवात्मा क्या है? क्या हम तुरंत यहाँ पहुंच सकते हैं? या आप देख सकते हैं? जिनके पास आत्मा है, वे प्रयास कर सकते हैं, जो नहीं करते वे भी प्रयास कर सकते हैं।

विषय सूची

1. प्रस्तावना
2. एक शब्द
3. परिचय
4. साधक - साधना
5. स्तोत्र - 1
6. स्तोत्र - 2
7. स्तोत्र - 3
8. स्तोत्र - 4
9. स्तोत्र - 5
10. स्तोत्र - 6
11. स्तोत्र - 7
12. स्तोत्र - 8
13. स्तोत्र - 9
14. स्तोत्र - 10
15. स्तोत्र - 11
16. स्तोत्र - 12

E-ISBN: 978-93-5747-616-4

MRP Rs: 50/-

Selfypage Developers Pvt Ltd